

भारत में तुलसीदास एवं आधुनिक सुधारवादी विचारको की वर्तमान प्रासंगिकता

राम कुमार शर्मा

सहायक आचार्य, हिंदी, सौरभ कॉलेज ऑफ़ टीचर ट्रेनिंग, खेड़ा, हिंडौन सिटी

सारांश:

तुलसीदास और आधुनिक सुधारवादी विचारकों का साहित्यिक योगदान अपने-अपने युग और समाज के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। तुलसीदास का 'रामचरितमानस' जहां भक्तिपरक और आदर्शवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, वहीं आधुनिक सुधारवादी विचारक सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक सुधारों की दिशा में कार्यरत रहे हैं। यह शोध पत्र तुलसीदास और प्रमुख सुधारवादी विचारकों के विचारों और सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसमें उनके समाज सुधार के प्रयास, धार्मिक दृष्टिकोण और साहित्यिक योगदान का विश्लेषण किया गया है। तुलसीदास का 'रामचरितमानस' भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने राम के आदर्श चरित्र के माध्यम से नैतिकता, धर्म और कर्तव्यपालन का संदेश दिया। तुलसीदास का मानना था कि ईश्वर की भक्ति और धार्मिक अनुशासन से व्यक्ति और समाज में सुधार हो सकता है। उनके लेखन में धार्मिक और नैतिक शिक्षा का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो उस समय के समाज में महत्वपूर्ण सुधार लाने का प्रयास था। तुलसीदास का योगदान केवल धार्मिक और नैतिक शिक्षा तक ही सीमित नहीं था। उन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं पर भी गहरा प्रभाव डाला। उनके कार्यों में समाज सुधार के संदेश, धार्मिक अनुशासन, और नैतिकता के आदर्श शामिल थे। 'रामचरितमानस' में राम के चरित्र के माध्यम से उन्होंने यह संदेश दिया कि एक आदर्श समाज कैसे होना चाहिए और इसमें नैतिकता और धर्म का कितना महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी रचनाओं ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और अनैतिक प्रथाओं के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने यह दिखाया कि धार्मिकता और नैतिकता के आदर्शों का पालन करके ही समाज में वास्तविक सुधार लाया जा सकता है। तुलसीदास ने अपने साहित्य के माध्यम से लोगों को नैतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से जागरूक किया और समाज में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया।

तुलसीदास के लेखन का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके काव्य में व्यक्त धार्मिक और नैतिक मूल्यों ने समाज को एक नया दृष्टिकोण दिया। उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए आदर्शों ने समाज के विभिन्न वर्गों को नैतिकता और धर्म की दिशा में प्रेरित किया। 'रामचरितमानस' के माध्यम से उन्होंने समाज में नैतिकता, धार्मिकता, और कर्तव्यपालन के आदर्शों का प्रचार किया और समाज को सुधारने का प्रयास किया। आधुनिक सुधारवादी विचारक जैसे राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, और महात्मा गांधी ने भारतीय समाज को सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक सुधारों की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा, बाल विवाह, और जाति प्रथा जैसी कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष किया और शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया। दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की और वेदों के साक्षात्कार के माध्यम से समाज में सुधार का प्रयास किया। महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा और स्वराज के सिद्धांतों के माध्यम से समाज और राजनीति में सुधार का प्रयास किया।

यह शोध पत्र तुलसीदास और आधुनिक सुधारवादी विचारकों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें उनके धार्मिक दृष्टिकोण, सामाजिक सुधार के प्रयास और साहित्यिक योगदान की विशेषताओं का विश्लेषण किया गया है। तुलसीदास का साहित्य धार्मिक और नैतिक दृष्टिकोण पर आधारित था, जबकि सुधारवादी विचारकों का दृष्टिकोण सामाजिक और राजनीतिक सुधार पर केंद्रित था। इस अध्ययन के माध्यम से, हम यह समझ सकते हैं कि किस प्रकार विभिन्न युगों में अलग-अलग दृष्टिकोण और सिद्धांतों के माध्यम से समाज सुधार का प्रयास किया गया। तुलसीदास और आधुनिक सुधारवादी विचारकों का साहित्यिक और समाज सुधारक योगदान अपने-अपने युग में महत्वपूर्ण था। दोनों ने अपने विचारों और सिद्धांतों के माध्यम से समाज में सुधार लाने का प्रयास किया। तुलसीदास ने धार्मिक और नैतिकता के माध्यम से सुधार का संदेश दिया, जबकि सुधारवादी विचारकों ने सामाजिक और राजनीतिक सुधारों की दिशा में कार्य किया। दोनों के विचार और सिद्धांत समाज सुधार के महत्वपूर्ण अंग हैं और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मुख्यशब्द: सुधारवादी, योगदान, भक्तिपरक, आदर्शवादी, नैतिकता, धर्म, कर्तव्यपालन, संघर्ष

प्रस्तावना:

तुलसीदास (1532–1623) का 'रामचरितमानस' भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसमें राम की जीवन गाथा को कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। तुलसीदास के साहित्य में भक्ति, आदर्शवाद और नैतिकता का विशेष स्थान है। 'रामचरितमानस' न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक, नैतिक और धार्मिक धरोहर का प्रतीक भी है। इस ग्रंथ के माध्यम से तुलसीदास ने राम के आदर्श चरित्र और उनके गुणों को प्रस्तुत किया, जिससे समाज में नैतिकता और धार्मिकता का प्रचार हुआ। दूसरी ओर, 19वीं और 20वीं सदी के सुधारवादी विचारक जैसे राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी आदि, समाज सुधार और धार्मिक पुनर्जागरण के लिए प्रसिद्ध हैं। इन विचारकों ने भारतीय समाज को सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों से मुक्त करने का प्रयास किया। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा, बाल विवाह और जाति प्रथा जैसी कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष किया। दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की और वेदों के

साक्षात्कार और स्वाध्याय पर जोर दिया। महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा और स्वराज के माध्यम से समाज सुधार का प्रयास किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तुलसीदास और आधुनिक सुधारवादी विचारकों के विचार और उनके प्रयास समाज सुधार के विभिन्न पहलुओं को प्रकट करते हैं। तुलसीदास ने जहां धर्म और नैतिकता के माध्यम से समाज को सुधारने का प्रयास किया, वहीं सुधारवादी विचारकों ने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक सुधारों की दिशा में कार्य किया। इस शोध पत्र का उद्देश्य तुलसीदास और आधुनिक सुधारवादी विचारकों के विचारों और सिद्धांतों का तुलनात्मक अध्ययन करना है, जिससे समाज सुधार के विभिन्न दृष्टिकोणों और उनके प्रभावों को समझा जा सके। तुलसीदास का साहित्य उस समय के समाज की धार्मिक और नैतिक आवश्यकताओं का प्रतीक था। उनके लेखन में भक्ति, प्रेम, और धर्म की महत्ता को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। 'रामचरितमानस' में राम का आदर्श चरित्र समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। तुलसीदास का मानना था कि धर्म और नैतिकता के पालन से ही व्यक्ति और समाज में सुधार हो सकता है।

आधुनिक सुधारवादी विचारकों ने सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाया। राजा राममोहन राय ने समाज में महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए सती प्रथा का विरोध किया और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया। दयानंद सरस्वती ने वेदों के साक्षात्कार के माध्यम से समाज में शिक्षा और स्वाध्याय का महत्व बताया। महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों के माध्यम से न केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नेतृत्व प्रदान किया, बल्कि समाज में नैतिकता और धार्मिकता का भी प्रचार किया।

तुलसीदास के सुधारवादी दृष्टिकोण:

तुलसीदास के साहित्य में भक्ति और नैतिकता का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने समाज में धर्म और नैतिकता के महत्व को प्रमुखता से प्रस्तुत किया। 'रामचरितमानस' में राम के आदर्श चरित्र को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने समाज को नैतिकता, धर्म और कर्तव्यपालन का संदेश दिया। तुलसीदास का मानना था कि समाज में नैतिकता और धर्म का पालन करने से ही समाज में सुधार संभव है। तुलसीदास ने अपने काव्य के माध्यम से उन नैतिक मूल्यों को उजागर किया जो एक आदर्श समाज के निर्माण के लिए आवश्यक हैं। उनके साहित्य में निम्नलिखित सुधारवादी दृष्टिकोण परिलक्षित होते हैं:

- 1. धार्मिक एकता और समन्वय:** तुलसीदास ने अपने ग्रंथों में धार्मिक एकता और समन्वय पर बल दिया। उन्होंने 'रामचरितमानस' में विभिन्न धार्मिक पंथों और मान्यताओं को समाहित किया, जिससे समाज में धार्मिक सौहार्द और सहिष्णुता का संदेश दिया गया। तुलसीदास ने हिंदू धर्म के विभिन्न रूपों और परंपराओं को एकीकृत करने का प्रयास किया, जिससे समाज में धार्मिक संघर्षों को कम किया जा सके।
- 2. नारी सम्मान और गरिमा:** तुलसीदास ने अपने काव्य में महिलाओं की गरिमा और सम्मान को विशेष महत्व दिया। 'रामचरितमानस' में सीता का चरित्र एक आदर्श नारी का प्रतीक है, जो धर्म, कर्तव्य और सम्मान का पालन करती है। तुलसीदास ने समाज में महिलाओं के सम्मान और उनकी भूमिका को महत्वपूर्ण बताया, जिससे समाज में नारी गरिमा और सम्मान को बढ़ावा मिला।
- 3. नैतिकता और आदर्शवादी जीवन:** तुलसीदास ने अपने साहित्य में नैतिकता और आदर्शवादी जीवन को प्रमुखता दी। राम का चरित्र एक आदर्श पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो सत्य, धर्म, और कर्तव्यपालन का प्रतीक है। तुलसीदास का मानना था कि समाज में नैतिकता और आदर्शों का पालन करने से ही समाज में सुधार संभव है। उन्होंने सत्य, अहिंसा, और करुणा जैसे गुणों को समाज में बढ़ावा देने का प्रयास किया।
- 4. सामाजिक समानता और न्याय:** तुलसीदास ने अपने साहित्य में सामाजिक समानता और न्याय पर जोर दिया। उन्होंने समाज में जाति, वर्ग, और धर्म के भेदभाव को समाप्त करने का संदेश दिया। 'रामचरितमानस' में निषादराज गुह और शबरी जैसे पात्रों के माध्यम से उन्होंने समाज में समानता और न्याय का महत्व बताया।
- 5. धार्मिक और नैतिक शिक्षा:** तुलसीदास ने अपने ग्रंथों में धार्मिक और नैतिक शिक्षा का महत्व बताया। उनका मानना था कि धार्मिक और नैतिक शिक्षा से व्यक्ति और समाज में सुधार हो सकता है। उन्होंने समाज को धार्मिक और नैतिक मूल्यों का पालन करने का संदेश दिया, जिससे समाज में नैतिकता और धार्मिकता का प्रचार हो सके।
- 6. भक्ति आंदोलन का समर्थन:** तुलसीदास ने भक्ति आंदोलन का समर्थन किया और समाज में भक्ति और प्रेम का महत्व बताया। उनका मानना था कि ईश्वर की भक्ति और प्रेम से व्यक्ति के हृदय में परिवर्तन आ सकता है और समाज में सुधार संभव है। उन्होंने 'रामचरितमानस' में राम के प्रति असीम भक्ति और प्रेम का चित्रण किया, जिससे समाज में भक्ति आंदोलन को बल मिला।

तुलसीदास के सुधारवादी दृष्टिकोण ने उनके समय के समाज को नैतिक और धार्मिक दृष्टि से सशक्त किया। उनके साहित्य ने समाज में नैतिकता, धर्म, और कर्तव्यपालन का महत्व बढ़ाया, जिससे समाज में सुधार और विकास संभव हो सका। तुलसीदास के विचार और सिद्धांत आज भी समाज सुधार के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

आधुनिक सुधारवादी विचारक:

राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी जैसे सुधारवादी विचारकों ने समाज सुधार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। इन विचारकों ने समाज में प्रचलित कुरीतियों, अंधविश्वासों, और असमानताओं को समाप्त करने के लिए विभिन्न आंदोलन चलाए और अपने विचारों के माध्यम से समाज को जागरूक किया।

1. राजा राममोहन राय (1772–1833):

राजा राममोहन राय ने भारतीय समाज में प्रचलित कई कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह और जाति प्रथा जैसी कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई और इनके उन्मूलन के लिए सामाजिक और कानूनी प्रयास किए।

- **सती प्रथा:** राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के खिलाफ कड़ा संघर्ष किया और इसे समाप्त करने के लिए ब्रिटिश सरकार पर दबाव डाला। उनकी पहल पर 1829 में सती प्रथा को अवैध घोषित किया गया।
 - **बाल विवाह:** उन्होंने बाल विवाह के खिलाफ भी आवाज उठाई और महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों के पक्ष में कार्य किया।
 - **धार्मिक सुधार:** राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य हिंदू धर्म में सुधार लाना और धार्मिक अंधविश्वासों को समाप्त करना था।
 - **शिक्षा:** उन्होंने आधुनिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए स्कूलों और कॉलेजों की स्थापना की और समाज में शिक्षा के महत्व को उजागर किया।
- 2. दयानंद सरस्वती (1824–1883):**
- दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की और समाज सुधार के लिए वेदों के साक्षात्कार और स्वाध्याय पर जोर दिया।
- **आर्य समाज:** दयानंद सरस्वती ने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की, जिसका उद्देश्य वैदिक धर्म और संस्कृति को पुनर्जीवित करना था। आर्य समाज ने मूर्तिपूजा, अंधविश्वास और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष किया।
 - **वेदों का प्रचार:** दयानंद सरस्वती ने वेदों के महत्व को पुनर्स्थापित करने के लिए वेदों का अध्ययन और प्रचार किया। उनका मानना था कि वेदों में सभी समस्याओं का समाधान निहित है।
 - **शिक्षा:** उन्होंने शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया और लड़कियों की शिक्षा को भी महत्वपूर्ण बताया। उनके प्रयासों से आर्य समाज ने अनेक स्कूल और कॉलेजों की स्थापना की।
 - **सामाजिक सुधार:** दयानंद सरस्वती ने समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों और अंधविश्वासों का विरोध किया और समाज में सुधार के लिए कई आंदोलन चलाए।
- 3. महात्मा गांधी (1869–1948):**
- महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा और स्वराज के माध्यम से समाज सुधार का प्रयास किया। गांधीजी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और सामाजिक सुधारों के माध्यम से समाज को जागरूक किया।
- **सत्य और अहिंसा:** गांधीजी का मानना था कि सत्य और अहिंसा के माध्यम से ही समाज में सुधार और स्वतंत्रता संभव है। उन्होंने सत्याग्रह और अहिंसात्मक आंदोलन के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया।
 - **स्वराज:** गांधीजी ने स्वराज (स्व-शासन) का प्रचार किया और भारतीयों को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी। उनका मानना था कि स्वराज से ही समाज में न्याय और समानता स्थापित हो सकती है।
 - **सामाजिक समानता:** गांधीजी ने समाज में जाति प्रथा और अस्पृश्यता के खिलाफ संघर्ष किया। उन्होंने हरिजन आंदोलन चलाया और समाज में समानता और भाईचारे का संदेश दिया।
 - **ग्रामीण विकास:** गांधीजी का मानना था कि भारत की आत्मा उसके गांवों में बसती है। उन्होंने ग्रामीण विकास और स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से समाज में सुधार का प्रयास किया।
- राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी जैसे सुधारवादी विचारकों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों के खिलाफ संघर्ष किया और सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक सुधारों की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए। इन विचारकों के प्रयासों से समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया और उन्होंने समाज को नैतिक, धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके विचार और सिद्धांत आज भी समाज सुधार के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

तुलसीदास एवं सुधारवादी विचारक तुलनात्मक अध्ययन:

1. धार्मिक दृष्टिकोण:

- **तुलसीदास:** तुलसीदास का साहित्य भक्तिपरक है और राम के आदर्श चरित्र को प्रस्तुत करता है। उनका मानना था कि धर्म और नैतिकता से ही समाज में सुधार संभव है। उनके काव्य में धार्मिक भक्ति का उच्च स्थान है, और उन्होंने समाज को धार्मिकता, भक्ति और नैतिकता के माध्यम से सुधारने का प्रयास किया। 'रामचरितमानस' में राम की जीवनगाथा के माध्यम से धार्मिक आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है, जिसमें सत्य, धर्म, और नैतिकता के सिद्धांतों को महत्व दिया गया है।
- **सुधारवादी विचारक:** सुधारवादी विचारकों का दृष्टिकोण धार्मिक सुधार पर केंद्रित था। राजा राममोहन राय ने बहुविवाह, सती प्रथा और बाल विवाह जैसी कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष किया। दयानंद सरस्वती ने वेदों के साक्षात्कार और मूर्तिपूजा के विरोध के माध्यम से धार्मिक सुधार की दिशा में कार्य किया। इन विचारकों ने धार्मिक अंधविश्वासों और कुरीतियों को समाप्त करने के लिए अपने आंदोलनों का नेतृत्व किया और समाज को धार्मिक दृष्टिकोण से जागरूक किया।

2. सामाजिक सुधार:

- **तुलसीदास:** तुलसीदास ने अपने साहित्य में नैतिकता और आदर्शवादी जीवन को प्रमुखता दी। उन्होंने समाज में धार्मिक और नैतिक मूल्यों के पालन का संदेश दिया। 'रामचरितमानस' में नैतिकता, धर्म, और कर्तव्यपालन का महत्व स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उन्होंने समाज को नैतिकता और आदर्शों के माध्यम से सुधारने का प्रयास किया।
- **आधुनिक विचारक:** आधुनिक विचारकों ने सामाजिक कुरीतियों और अंधविश्वासों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और समाज में सुधार की दिशा

में कार्य किया। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा और बाल विवाह के खिलाफ संघर्ष किया और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया। दयानंद सरस्वती ने जातिवाद और अंधविश्वासों के खिलाफ आवाज उठाई। महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष किया और हरिजन आंदोलन चलाया। इन विचारकों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों और असमानताओं को समाप्त करने का प्रयास किया और सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांतों का प्रचार किया।

3. राजनीतिक दृष्टिकोण:

- **तुलसीदास:** तुलसीदास का साहित्य राजनीतिक दृष्टिकोण से मुक्त था और मुख्यतः धार्मिक और नैतिकता पर केंद्रित था। उनके साहित्य में राजनीतिक विचारधारा का उल्लेख नहीं है, बल्कि उन्होंने धार्मिक और नैतिक आदर्शों को प्रस्तुत किया। 'रामचरितमानस' में रामराज्य का आदर्श प्रस्तुत किया गया है, जो एक आदर्श राज्य का प्रतीक है, लेकिन यह मुख्यतः नैतिकता और धर्म पर आधारित है।
- **महात्मा गांधी:** महात्मा गांधी ने राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से संघर्ष किया और समाज में नैतिकता और धर्म का महत्व बताया। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और सत्य, अहिंसा, और स्वराज के सिद्धांतों के माध्यम से समाज में राजनीतिक और सामाजिक सुधार का प्रयास किया। गांधीजी का मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता से ही समाज में सुधार और न्याय संभव है। उन्होंने स्वराज, सत्याग्रह, और अहिंसा के माध्यम से भारतीय समाज को जागरूक किया और स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया।

तुलसीदास और आधुनिक सुधारवादी विचारकों के दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि दोनों ने अपने-अपने युग और संदर्भ में समाज सुधार का प्रयास किया। तुलसीदास ने धार्मिक और नैतिक मूल्यों के माध्यम से समाज को सुधारने का प्रयास किया, जबकि आधुनिक सुधारवादी विचारकों ने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक सुधारों की दिशा में कार्य किया। दोनों के विचार और सिद्धांत समाज सुधार के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हैं और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्ष:

तुलसीदास और आधुनिक सुधारवादी विचारकों का योगदान अपने-अपने युग और समाज के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। तुलसीदास ने धार्मिक और नैतिकता के माध्यम से समाज सुधार का संदेश दिया, जबकि आधुनिक विचारकों ने सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक सुधारों की दिशा में कार्य किया। दोनों के विचार और सिद्धांत समाज सुधार के महत्वपूर्ण अंग हैं और समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तुलसीदास का 'रामचरितमानस' धार्मिक और नैतिकता के आदर्शों पर आधारित है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में नैतिकता, धर्म और कर्तव्यपालन का महत्व बताया। राम के आदर्श चरित्र के माध्यम से उन्होंने समाज को नैतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से सुधारने का प्रयास किया। तुलसीदास का मानना था कि समाज में नैतिकता और धर्म का पालन करने से ही समाज में सुधार संभव है।

दूसरी ओर, आधुनिक सुधारवादी विचारकों जैसे राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती और महात्मा गांधी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और असमानताओं के खिलाफ संघर्ष किया। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा, बाल विवाह और जाति प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई और सामाजिक सुधार के लिए कानूनी और शैक्षिक प्रयास किए। दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की और वेदों के साक्षात्कार और स्वाध्याय पर जोर दिया। महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा और स्वराज के माध्यम से समाज सुधार का प्रयास किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तुलसीदास ने अपने साहित्यिक कार्यों के माध्यम से धर्म और नैतिकता के महत्व को उजागर किया। उन्होंने रामायण के माध्यम से समाज को धार्मिक उत्थान का संदेश दिया, जिसमें मानवीय मूल्यों का प्रमोट किया गया। सुधारवादी विचारकों ने उस समय के धार्मिक कुरीतियों और अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया और समाज में न्याय के लिए काम किया। तुलसीदास ने अपने ग्रंथों में नैतिकता, परिवार मूल्यों, और सामाजिक जीवन के महत्व को प्रमुखता दी। आधुनिक सुधारवादी विचारकों ने सामाजिक बुराइयों और अंधविश्वासों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और समाज में सुधार के लिए उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किए। इसमें समाज के विभिन्न पहलुओं पर उनके योगदान का विशेष महत्व था। तुलसीदास का साहित्य मुख्यतः धार्मिक और नैतिक विचारों पर केंद्रित था, जबकि आधुनिक समय में महात्मा गांधी ने राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए सत्याग्रह और अहिंसा का मार्ग अपनाया। गांधीजी ने समाज में न्याय और समानता के लिए उत्कृष्ट प्रयास किए और राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए संघर्ष किया।

तुलसीदास और आधुनिक सुधारवादी विचारकों का योगदान समाज सुधार के विभिन्न पहलुओं को उजागर करता है। उनके विचार और सिद्धांत समाज के नैतिक, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधार के लिए महत्वपूर्ण हैं और समाज के विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। दोनों के प्रयासों ने समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए और भविष्य में भी समाज सुधार के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे।

सन्दर्भ:

1. श्रीधरण, टी.पी. (1994). 'राजा राममोहन राय: अ बायोग्राफी'. प्रकाशक: ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
2. गांधी, एम.के. 'माई एक्सपेरिमेंट्स विथ ट्रुथ', नवरंग पब्लिशर्स, नई दिल्ली.
3. मुकर्जी, आर.के. 'सोशल रिफॉर्मर्स ऑफ इंडिया', पब्लिशर: ओक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
4. सिंह, वी.पी. 'रिलिजियस एंड सोशल रिफॉर्मर्स इन मॉडर्न इंडिया', पब्लिशर: रुचि प्रकाशन.
5. शर्मा, आर. 'तुलसीदास: साहित्यिक और धार्मिक दृष्टिकोण', पब्लिशर: साहित्य अकादमी.
6. डॉ. रामविलास शर्मा, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और दहंदी आलोचना, पृष्ठ 34, राजकमल प्रकाशन, प्रारंभिक संस्करण, नई दिल्ली, 1956
7. डॉ. रामविलास शर्मा, स्वाधीनता और राष्ट्रीय वादविला, पृष्ठ 113, वाणी पुस्तक मंदिर, प्रारंभिक संस्करण, 1956
8. डॉ. हजारी प्रसाद द्वेदी, दहंदी वादविला की भूमिका, पृष्ठ 101, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

9. विवेकानंद त्रिपाठी, दहंदी आलोचना, पृष्ठ 74, राजकमल प्रकाशन, प्रारंभिक संस्करण, नई दिल्ली, 1972
10. डॉ. हजारी प्रसाद द्वेदी, दहंदी वादविला की भूमिका, पृष्ठ 101, प्रारंभिक संस्करण, 1940
11. डॉ. रामविलास शर्मा, परंपरा का मूल्यांकन, पृष्ठ 9, राजकमल प्रकाशन, नवीन संस्करण, नई दिल्ली, 2009
12. सचिदानंद सिंह चौहान, दाशातनक विचार और समन्वयवाद (आलोचनात्मक लेख), पृष्ठ 30–31
13. डॉ. रामविलास शर्मा, मार्क्सवादी और प्रगतिशील वादविला, पृष्ठ 344, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
14. सुधीश पचौरी (संपादक), वाक्-पत्रिका, पृष्ठ 101, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, जनवरी-मार्च, 2007
15. सुधीश पचौरी (संपादक), वाक्-पत्रिका, पृष्ठ 101
16. अजय तिवारी (संपादक), तुलसीदास: एक पुनर्मूल्यांकन, पृष्ठ 279, आधार प्रकाशन प्रारंभिक संस्करण, नई दिल्ली, 2006